Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कामकाजी महिलाओं की समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

नागेश्वरी कुमारी*

* शोधार्थी, राधा गोविंद यूनिवर्सिटी, रामगढ़ (झारखंड) भारत

शोध सारांश – नारी को 'आधी दुनिया' कहा जाता है। वह एक ऐसी 'आधी दुनिया' है जो कदम- कदम पर पुरुष द्वारा अनुशासित होती रही है। आजादी के बाद नारी शिक्षा की स्थिति में सुधार के कारण उच्च मध्यवर्गीय के साथ-साथ आम शहरी मध्यवर्गीय परिवारों की नारियां भी शिक्षित हुई और उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होने की प्रयास की। इसमें से कई महिलाओं ने सफलता भी हासिल की, लेकिन पुरुष प्रधान सोच और समझ हमेशा उनके आड़े आते हैं, जो उनकी समस्याओं का कारण बनती है। कामकाजी महिलाएं कौन है? असल इस प्रश्न का उत्तार समाज ने अपनी दृष्टिकोण और सोच पर आधारित बनाकर संग्रहित किया है। समाज सोचता है कि घर से बाहर काम करने वाली महिलाएं कामकाजी महिलाएं हैं। कामकाजी महिला का अर्थ काम करने वाली महिला से है ये सिर्फ सामाजिक दृष्टिकोण ही है, जो महिलाओं को तनावग्रस्त बनाता है। घर परिवार में कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक बाहर काम करने वाली महिला को कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता है। उन्हें बस उनसे अपने लिए सेवा चाहिए। एक महिला क्या कुछ प्रदान नहीं करती। नौकरी करने वाली महिला चाहे जितनी परेशान हो, उसे ही सब कुछ निभाना पड़ता है एक महिला न सिर्फ शारीरिक रूप से परेशान रहती है बल्कि मानसिक रूप से भी बहुत अधिक तनावग्रस्त रहती हैं। जिसके कारण उनका पूरा जीवन प्रभावित होता है जिस सेवा के लिए हमें कीमत चुकानी पड़ती है किसी कार्य को महिलाएं बिना मूल्य के एवं बेरोजगारी के नाम के साथ खुशी से करती हैं।

अध्ययन में हम कामकाजी महिलाओं की समस्याओं के बारे में जानने की कोशिश करेंगे। कि वो घर और बाहर दोनों ही समस्याओं में महिलाओं को दोहरी भूमिका अदा करनी पड़ती है।

शब्द कुंजी – सामाजिक असमानता, दृष्टिकोण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक विडम्बना,कामकाजी, कार्यस्थल, समस्याएं।

प्रस्तावना – कामकाजी शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। जिन्हें समाज के कुछ पहलुओं की सोच ने सीमित कर दिया है। कामकाजी दो शब्दों से मिलकर बना शब्द है (काम काजी) काम करने वाला। कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायरू नौकरी करने वाली महिलाओं के संदर्भ में किया जाता है यथार्थ वे महिलाएं जो बाहर नियमित रूप से आर्थिक और व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है। कामकाजी महिला शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयोग हुआ है जो तनख्वाह वाले कार्य में लगी हैं। वर्तमान समय में महिलाएं घर के साथ-साथ कार्यालय का कार्य भी देखती है जिसके लिए उसे एक निश्चित वेतन दिया जाता है। अब महिलाएं विद्यालयों, कॉलेजों और कार्यालयों में कार्य करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उद्योग - धंधों, कारखानो, न्यायालयों प्रशासन, राजनीति तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्र में भी कार्य कर रही है। कामकाजी होने के कारण जहां एक ओर महिलाओं को परिस्थिति और प्रतिष्ठा में परिवर्तन आया है जो कि सकारात्मक है वहीं दूसरी ओर उनकी समस्याएं और भी बढी है। वर्तमान में कार्यरत महिलाओं को घर के कार्य के साथ-साथ कार्यालय की जिम्मेदारियां उठानी पड़ती है और दोनों के बीच उचित तालमेल भी बिठाना पड़ता है जो बहुत ही कठिन कार्य है आज के समय में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं कार्यरत न हो। सामाजिक विकास की प्रक्रिया में भी निरू संदेह महिलाओं के योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। दुनिया में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत विकास के नाम से जाना जाता है। भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधित सीमिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, परिवार, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरुष दोनों को समान रूप से देखना आवश्यक है। वर्ष 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में घोषित किया गया जिसका उद्देश्य महिला विकास को बढ़ावा देना और अपने अधिकार के प्रति जागरूक करना था। वर्तमान में जो स्त्रियां शिक्षित और नौकरी करने वाली स्त्रियों की भूमिका निभा रही है उससे उन्हें एक नया सामाजिक तथा आर्थिक दर्जा प्राप्त हुआ है तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उनका दृष्टिकोण भी प्रभावित हुआ है।

किसी भी समाज की तस्वीर बदलने में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि मुझे योग्य माता दे दो मैं तुम्हें योग्य राष्ट्र दूंगा। वर्तमान के हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। महिला सशक्तिकरण के दौर में महिलाओं ने घर की देहरी से बाहर कदम बढ़ाकर स्वयं कार्यशील महिला होने का गौरव प्राप्त किया है और स्वयं की एवं समाज की स्थिति को बदलने का बिडा उठाया है। 21वीं सदी में महिलाओं ने ऐसे कार्यों में भी प्रवेश कर लिया है जिन पर सदियों से पुरुषों का एकाधिकार था। वर्तमान में देश की सबसे बड़ी सुरक्षा सैनिक में भी भारतीय महिलाएं कार्यरत हैं जो की महिलाओं के लिए गौरव की बात है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारत कामकाजी महिलाओं का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं के समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – शुद्ध प्रविधि विश्लेषणात्मक है एवं व्यवहारिक जीवन पर आधारित है। शोध पत्र का विश्लेषण के लिए अनेक पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा विभिन्न शोध जर्नल में प्रकाशित शोध पत्रों का अध्ययन किया गया है।

पूर्व शोध अध्ययन

1. वर्षा कुमारी द्धारा उड़ीशा राज्य के 'राउलकेला शहर' सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमो, बैंक, स्कूल व कॉलेजों में कार्यरत महिलाएं जैसे विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं और चुनौतियों का अध्ययन किया गया । अध्ययन में पाया कि विभिन्न आयु – वर्ग में एवं विशेष वर्ग की महिलाओं तथा विभिन्न श्रेणियां में कार्यरत महिलाएं जैसे अविवाहित, विवाहित तथा तलाकशुदा महिलाओं की समस्याओं व चुनौतियों में विभिन्नता पाई जाती है लेकिन कुछ सामान्य तरह की समस्याओं जैसे – शारीरिक व मानसिक तनाव, नौकरी व परिवार के बीच उचित संतुलन की समस्या, परिवार की देखभाल व कार्यस्थल पर भेदभाव आदि का सामना करना पड़ता है।

2. सरिता वाशिष्ठ (2010),'महिला सशक्तिकरण', प्रस्तुत पुस्तिका में लेखिका ने अपने अध्ययन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और कामकाजी महिलाओं के अधिकारों पर प्रकाश डाला है उनके अनुसार महिला सशक्तिकरण सही मायने में तभी सफल हो सकता है जब महिलाओं को अपने कामकाजी अधिकारों का ज्ञान हो । उनके अनुसार जागरूकता एक बहुत बड़ी कमी है। जिसके कारण कामकाजी महिलाएं अपने अधिकारों का लाभ नहीं उठा पाती।

3. रेखा तिवारी, दिवाकर शर्मा (2013),'प्रस्तुतिका में लेखिका ने बताया है कि कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग' प्राय: नौकरी करने वाली महिलाओं के संदर्भ में किया जाता है यथार्थ वे महिलाएं जो बाहर नियमित रूप से आर्थिक और व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं। कामकाजी महिला शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो वेतन वाले कार्य में लगी है। काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नहीं, दूसरे व्यक्तियों से काम लेना भी है तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन देना आदि भी सम्मिलित है।

4. निर्मला के चित्रोडा (2016),'भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति', प्रस्तुत पुस्तिका में लेखिका ने बताया है कि भारत में महिलाओं की स्थिति ने बड़े–बड़े उतार – चढ़ाव देखे हैं। वैदिक युग में उसे देवी की तरह पूजा जाता था वही मुस्लिम युग में उसे दास की तरह रखा जाता था। स्वतंत्रता के बाद से पालडा महिलाओं के पक्ष में रहा है या यू भी कह सकते हैं आजादी के बाद अनेक ऐसे सुधार हुए जिनसे महिलाओं की सामाजिक – आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत का चाहे खेले जगत हो या फिर स्वास्थ्य जगत महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं है। लेकिन इतनी तरक्की के बावजूद भी इन तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता कि उनकी स्थिति आज भी सोचनीय है।

5. शांति कुमार स्याल (2017),'कामकाजी महिलाएं समस्याएं और समाधान', प्रस्तुत पुस्तिका में बताया गया है कि कामकाजी महिला एक सशक्त महिला की श्रेणी में आती है। महानगरीय संस्कृति में परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों के सृजन के संदर्भ में उसकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वहां पारिवारिक वातावरण के रूप में संयुक्त परिवार के अन्य सदस्य या आस – पड़ोस का योगदान नगण्य होता है। विपरीत इसके पीढ़ी – लिखी होने के बावजूद भी महिलाएं घरेलू वातावरण में अंधविश्वास व दकियानूसी विचारधाराओं का शिकार हो जाती हैं।

6. रेनू पवार (2017) कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन में पाया कि इस बदलते परिवेश में महिलाएं बहुत विकसित और जागरूक हुई हैं और वह अपने जीवन को आर्थिक रूप से मजबूत करने में सक्षम है लेकिन साथ ही वह दोहरी भूमिका निभाने की मांग से अत्यधिक रूप से प्रभावित होते जा रही है। महिलाएं अपने पारिवारिक जीवन और कार्यस्थल पर संतुलन बनाते–बनाते खुद के जीवन को भूलते जा रही है। जिसके कारण उनके जीवन शैली पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

7. सुधीर कुमार श्रीवास्तव (1985) ने , 'महिला सशक्तिकरण में महिलाओं की भूमिका' के अध्ययन में बताया है कि महिलाएं तभी सशक्त हो सकती है जब शिक्षा के माध्यम से उन्हें जागरूक किया जाए।

8. संयुक्त राष्ट्रीय संघ ने (1975) को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया और नारी उत्थान की दिशा में अनेक प्रयास किए जिससे महिलाएं विकसित हो रही है। लेकिन समाज की दृष्टिकोण के कारण महिलाएं आज भी तनावपूर्ण जीवन से जूझ रही है। इसके लिए समाज का जागरूक होना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन में कार्यरत महिलाओं की भूमिका और उनमें सामंजस्य स्थापित करती महिलाओं का वर्णन से संबंधित प्रश्न के उत्तार में पाया कि कामकाजी महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या है दोहरी जिम्मेदारियों का बोझ। महिलाओं पर व्यवसाय का उत्तारदायित्व बढ़ा देने के बावजूद उनकी पारंपरिक भूमिका में कोई विशेष कमी नहीं की गई है। हमारे देश में अनेक रूढ़िवादी परंपराओं को पीछे छोड़कर एक नई सोच को अपनाया है। किंतु जब बात महिलाओं की आती है तो आज भी समाज का दृष्टिकोण कुछ ज्यादा विकसित नहीं हुआ है। हमारी सरकार के प्रयासों और योजना तथा महिलाओं की शक्ति ने महिला जीवन को नई उड़ान दी है किंतु फिर भी दूहरी सोच व पितृसत्तात्मक समाज में नारी को समान अधिकार नहीं मिल पाते हैं। चाहे वह घर की कामकाजी महिला हो या बाहर काम करती हो। उसको अपनी आजादी और खुशियों के लिए हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। आर्थिक रूप से मजबूत महिलाएं भी इस समाज में गुलामी का जीवन व्यतीत कर संघर्ष कर रही है।

हमारी सरकार के कानून ने महिलाओं को चाहे बराबर के अधिकार दिए हैं। लेकिन समाज ने उन्हें सीमित दायरे में बांध रखा है। किसी भी घर समाज या देश की उन्नति एवं विकास में महिलाओं की बराबरी की भागीदारी होती है इसलिए हमें अगर देश हुआ समाज को उन्नत एवं विकसित करना है तो महिलाओं के लिए समाज का दृष्टिकोण बदलना अतिआवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची : –

1. ज्योति शर्मा (2014) कामकाजी महिलाओं का असल अर्थ और महत्व (एक विश्लेषणात्मक शोध), सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, एथेम्स महाविद्यालय, हैदराबाद, भारत।
2. आशा नगर (2021) भारत में कामकाजी महिलाओं की समस्या में समाधान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय देवली, टोंक राजस्थान, भारत इनोवेशन दी रिसर्च कॉन्सेप्ट आई एस एस एन : 2456 – 5474.
3. डॉ. शकीला खान एवं डॉ रानी दुबेरू कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं के तनाव का उनके स्वास्थ्य एवं पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन : केंद्रीय विश्वविद्यालय शिक्षा महाविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय शोध

पत्रिका इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल।

4. प्रवीण कुमार (2019) कामकाजी महिलाओं की समस्याएं एक समाजशास्त्रीय अध्ययन जनरल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन आईएसएसएन: 2230 – 7540.
5. वर्मा अंजलि (2009) भारत में कार्यशील महिलाएं, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. चित्तौड़ के निर्मला (2016), भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति, आत्माराम एंड संत प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. डॉ. बबीता एवं मधु (2024) journal of emerging technologies and innovative research.

****